

२ॐ नमः वज्रसत्ताय ॥ ॥ स्फु विगतिधक विधिमाह ॥ ॥ वीरकल
 ४॥ सज्जन नागप. वज्र घट्ट मकूट वज्र कृतादि स्फापनायाय ॥ ॥ स्फु
 विजदेवतादि स्फापयता ॥ ॥ आदो लिचाय ॥ गुग्गुलुलं काजयता ॥
 पंचगव्या ॥ ॥ धन ॥ ॥ सिंधु ॥ ॥ तथ्या ॥ ॥ गितेमाधि ॥ ॥ कलषादि वासना ॥
 विधिवत् हासं काजयता ॥ ॥ देवतार्चन विधि ॥ ॥ धूति धूपं लि ॥ ॥ अ
 यथा लयं सत्तय ॥ ॥ गुग्गुलुलदनके ॥ ॥ मगपूजा ॥ ॥ लावनास्वीतय ॥ ॥ त
 दनस्व दृष्टीगमय रेता निताने नदिगवर्हि न ह् ॥ ॥ गेता चिद्या देवतादि संपू

[illegible]

स्थवित्र

नृसिंध्यं वरुचक्षुःमितां तात्पर्यं विविच्य ॥ ॥ पंचरत्नस्य तावाच्यं दृष्टिम्
 वरुचक्षुःमम ॥ अविद्याय न निरर्थं ज्ञानं प्राप्तावो मय हे ॥ ॥ अथा
 त्रिषिकत्वमसि वृद्धेर्व
 श्रीगुरुवरुचक्षुःमम ॥ ॥ अथा
 प्रतत्यमहमिति ॥ ॥ अथा
 धिः ॥ एवमा ॥ अथा
 वातिन्नममाद्यसिद्धिं चित्ताव्य ॥ ॥ अथा

पदद स्वमा॥ धन प्राप्तिन सर्वतु या ॥ ग्ग स्यात्सहस्रं ॥ ॥ ॐ वज्राधिप
गित्वापतिषि च्छामितिषु वज्र समयत्वं होः॥ वज्रय छ भूः भूः भूः ग
हीतासिमया हगवन्मयि सन्निहि तोतव॥ धन द्य छ वि य॥ ॐ वज्र
द्य छ तिषि च्छ सूनतत्वम है॥ ॐ तिद्य छ तिषि च्छ ॥ रावना ॥ शिष्य
वेनाचनात्य न्न वज्र संतनवे शोचन नृपं सन सत्वाति न्न विराय ॥ धन
वज्रय छ क थ क पाने ग धिय क वि य॥ ॥ ॐ वज्र सत्वातिषि च्छामि
वज्र नामातिषि च्छ क त॥ हे अम क स वि न नाम ह पु व स्य॥ धन ति व स्या स

स्थवित्र

सूचिनतिचक ॥ हासवज्र— विलासवज्र ॥ अं वज्रनामातिषिक्कसूत्र
तत्त्वमहं ॥ गतिनामातिषिक्क ॥ धूलिचक्रुलशक्याय ॥ अं सूप्रतिष्ठित
वज्रस्यहा ॥ दत्तावम्भु दितल्लुकाय ॥ धूलिकावपालदेवद्रुप
सपकेकाय ॥ गालिपू का ॥ गालिदायके ॥ आसनवीना ॥ आ
रुविय ॥ दक्षवलिविय ॥ शिष्याधिवासन ॥ मधुलधिल ॥ पू
र्णहृति ॥ सग्वनतयविरुपूजा ॥ दक्षिणा ॥ वाधमंक्रय ॥ निसलावि
य ॥ क्षमाहृति ॥ वलिसमयविय ॥ दक्षवलिकाय ॥ लिखनेआदि

गवलिविय॥ दृषयागचय॥ लिखनजा॥ लखयाइकाय॥ ध्वलिको
मात्रीपूजा॥ समयाचक्रकोला मागेन धलित॥ ध्वलिकलंकफाय॥ ध्व
लिकाकरपूजा॥ गम चक्रमालकोपूजा॥ धूर्मागमिदगु॥ दृष
षवलिरूत्यादिमर्णति ॥ विनाहिषेकविधिः ॥ ॥ ॥ ॥

स्थिति (त्रिधेयकीवर्ष)

DH85

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

४